



गांधी जयंती पर शांति और अहिंसा का संदेश दोहराया

गांधी-शास्त्री जयंती पर राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति और पीएम मोदी ने अर्पित की श्रद्धांजलि

नई दिल्ली, एजेंसी

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 157वीं जयंती के अवसर पर और पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री की 122वीं जयंती पर राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू और उपराष्ट्रपति सी.पी. राधाकृष्णन ने पुष्पांजलि अर्पित की है।

राष्ट्रपति ने राजघाट जाकर बापू को पुष्पांजलि अर्पित की। उनकी ओर से सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर पोस्ट कर लिखा गया राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 157वीं जयंती के अवसर पर, मैं सभी देशवासियों की ओर से उन्हें सादर श्रद्धांजलि अर्पित करती हूँ।

राष्ट्रपति ने एक संदेश में लिखा विश्व समुदाय द्वारा गांधीजी के जीवन और आदर्शों को बहुत सम्मान दिया जाता है। आज विश्व के अनेक क्षेत्रों में अशांति और युद्ध का वातावरण है तथा सभी देशों पर इसका प्रभाव पड़ रहा है। ऐसी स्थितियों में महात्मा गांधी के शांति और अहिंसा के संदेश और अधिक प्रासंगिक हो जाते हैं। राष्ट्रपति ने आगे लिखा वर्ष 2047 तक विकसित राष्ट्र बनने के राष्ट्रीय



लक्ष्य की ओर हमारा देश आगे बढ़ रहा है। विकास की इस यात्रा में संवेदनशीलता और समावेश के मूल्यों को प्राथमिकता दी जा रही है, ताकि कोई भी देशवासी विकास के लाभ से वंचित न रहे। यह महात्मा गांधी के 'सर्वोदय' के आदर्श के अनुरूप है, जिसमें सभी के कल्याण और उत्थान की भावना निहित है।

■ पीएम मोदी ने श्रद्धांजलि दी : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने महात्मा गांधी की 157वीं जयंती के अवसर पर राजघाट पहुंचकर उन्हें श्रद्धांजलि दी। देशभर में नेताओं और नागरिकों ने गांधी जयंती मनाई और शांति, अहिंसा तथा स्वच्छता के उनके संदेश को याद किया। पीएम मोदी राजघाट पहुंचे और राष्ट्रपिता की समाधि पर आयोजित सर्वधर्म प्रार्थना सभा में शामिल हुए।

■ 'जय जवान, जय किसान' का आह्वान : उपराष्ट्रपति ने पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री को श्रद्धांजलि अर्पित की। उनके कार्यालय के आधिकारिक एक्स हैडल से लिखा गया आज विजय घाट पर पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री की जयंती पर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। शांत शक्ति और आसधारण सकल्य के धनी नेता, शास्त्री जी देश के प्रति अटूट समर्पण की मिसाल थे।

सीएम रेखा भी राजघाट पर आयोजित सर्वधर्म प्रार्थना सभा में शामिल हुई

दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता भी राजघाट पर आयोजित सर्वधर्म प्रार्थना सभा में शामिल हुईं और महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि दी। सीएम गुप्ता ने विजय घाट पर पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री की भी श्रद्धांजलि दी। दिल्ली के उपराज्यपाल तरनजीत सिंह संधू, केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल खट्टर, लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला और उपराष्ट्रपति सीपी राधाकृष्णन ने भी इस अवसर पर राजघाट पहुंचकर महात्मा गांधी को पुष्पांजलि अर्पित की। जयपुर में राजस्थान के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने राजस्थान सचिवालय में महात्मा गांधी को पुष्पांजलि अर्पित की। उन्होंने पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री की भी उनकी जयंती पर श्रद्धांजलि दी।

रायलसीमा में 1 लाख करोड़ का हॉर्टिकल्चर हब बनेगा: निर्मला सीतारमण

(पैन पॉवर न्यूज): अन्नमय्या, 2 अक्टूबर: केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने कहा कि रायलसीमा में कई महत्वपूर्ण विकास परियोजनाओं की शुरुआत की जा रही है। उन्होंने शुक्रवार को रायलसीमा हॉर्टिकल्चर हब की आधारशिला रखी और कार्यक्रम को संबोधित किया। उन्होंने घोषणा की कि रायलसीमा में 1 लाख करोड़ की लागत से हॉर्टिकल्चर हब स्थापित किया जाएगा। उन्होंने कहा कि क्षेत्र को समृद्ध कृषि क्षेत्र में बदलने और किसानों को यूरिया की कमी से बचाने के लिए कदम उठाए जा रहे हैं। सरकार ने निर्देश दिया है



कि यूरिया के एक बैग की कीमत 300 से अधिक नहीं होनी चाहिए। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि गोबरान योजना के तहत बायोगैस

उत्पादन के लिए एक व्यवस्था विकसित की जा रही है। उन्होंने बताया कि पीएम सूर्य घर योजना और पीएम-कुसुम योजना के तहत सोलर पंप उपलब्ध कराए गए हैं और इनके माध्यम से बिजली उपलब्ध कराने की व्यवस्था की जा रही है। उन्होंने कहा कि फसल नुकसान से किसानों को बचाने के लिए किसान इश्योरेंस स्कीम लाई गई है। मछुआरों और पशुपालकों के लिए भी नई योजनाएं शुरू की गई हैं। निर्मला सीतारमण ने आगे कहा कि प्रत्येक जिले में पशुओं के उपचार के लिए एक पशु चिकित्सक और मोबाइल पशु अस्पताल की व्यवस्था की जाएगी।

"मुझे आंध्र का बेटा मानें": अनंत अंबानी

(पैन पॉवर न्यूज): अन्नमय्या जिला: "आंध्र की धरती समृद्धि की धरती है। मुझे आंध्र का बेटा मानें। मैं राज्य के लिए क्या कर सकता हूँ, इस बारे में मेरा मार्गदर्शन करें," रिलायंस इंडस्ट्रीज के कार्यकारी निदेशक अनंत अंबानी ने आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री एन. चंद्रबाबू नायडू से कहा। उन्होंने कहा कि ग्लोबल हॉर्टिकल्चर हब और इंडियन स्कूल ऑफ एग्रीकल्चर की आधारशिला रखे जाने पर उन्हें बेहद खुशी है। शुक्रवार को अन्नमय्या जिले के मदनपल्ले में रायलसीमा हॉर्टिकल्चर हब की आधारशिला रखी गई। निर्मला सीतारमण ने आर्थिक विकास के लिए कई योजनाएं बनाई हैं इस कार्यक्रम में केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण, मुख्यमंत्री चंद्रबाबू नायडू, उपमुख्यमंत्री पवन कल्याण, मंत्री नारा लोकेश और अनंत अंबानी शामिल हुए। राज्य सरकार 1 लाख करोड़ के निवेश से रायलसीमा हॉर्टिकल्चर हब स्थापित कर रही है। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए अनंत अंबानी ने देश के आर्थिक विकास को मजबूत करने के लिए कई योजनाएं तैयार करने पर केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण की प्रशंसा की। उन्होंने प्रदेश में पंचायतों को मजबूत करने के लिए उपमुख्यमंत्री पवन कल्याण के प्रयासों की भी सराहना की। ग्लोबल हॉर्टिकल्चर हब और इंडियन स्कूल ऑफ एग्रीकल्चर की आधारशिला रखने के कार्यक्रम में अनंत अंबानी के भाषण ने उपस्थित लोगों को प्रभावित किया। उनके भाषण के बाद वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण, उपमुख्यमंत्री पवन कल्याण और मंत्री नारा लोकेश ने उनकी प्रशंसा की। इस अवसर पर मुख्यमंत्री चंद्रबाबू नायडू ने अनंत अंबानी को स्नेहपूर्वक गले लगाया।



उत्पादन के लिए एक व्यवस्था विकसित की जा रही है। उन्होंने बताया कि पीएम सूर्य घर योजना और पीएम-कुसुम योजना के तहत सोलर पंप उपलब्ध कराए गए हैं और इनके माध्यम से बिजली उपलब्ध कराने की व्यवस्था की जा रही है। उन्होंने कहा कि फसल नुकसान से किसानों को बचाने के लिए किसान इश्योरेंस स्कीम लाई गई है। मछुआरों और पशुपालकों के लिए भी नई योजनाएं शुरू की गई हैं। निर्मला सीतारमण ने आगे कहा कि प्रत्येक जिले में पशुओं के उपचार के लिए एक पशु चिकित्सक और मोबाइल पशु अस्पताल की व्यवस्था की जाएगी।

(पैन पॉवर न्यूज):

विजयवाड़ा: आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री एन. चंद्रबाबू नायडू ने विजयवाड़ा के ए-कन्वेंशन में आयोजित 'स्वच्छ आंध्र अवार्ड्स-2026' कार्यक्रम में भाग लिया। मुख्य अतिथि के रूप में उन्होंने 22 श्रेणियों में 130 राज्य स्तरीय पुरस्कार और 2,044 जिला स्तरीय पुरस्कार प्रदान किए। स्वच्छ गांवों, शहरों, संस्थानों और परिसरों को पुरस्कार दिए गए। मुख्यमंत्री ने सभी पुरस्कार विजेताओं को बधाई दी। इस अवसर पर मुख्यमंत्री चंद्रबाबू नायडू ने कहा, "महात्मा गांधी और लाल बहादुर शास्त्री की जयंती के अवसर पर मैं उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ। गांधीजी ने स्वतंत्रता से भी पहले स्वच्छता का आह्वान किया और इसे अपने कार्यों के माध्यम से करके दिखाया। कोलकाता में गंदे शौचालय

देखकर उन्होंने स्वयं उनकी सफाई की थी। गांधीजी का मानना था कि स्वच्छता किसी एक वर्ग की जिम्मेदारी नहीं है, बल्कि अपने स्वास्थ्य के लिए हर व्यक्ति को अपने आसपास का वातावरण स्वच्छ रखना चाहिए। इसी विचार से 2 अक्टूबर को स्वच्छ आंध्र अवार्ड्स-2026 का आयोजन किया जा रहा है।" उन्होंने कहा कि जापान में लोग सड़कों पर कचरा नहीं फेंकते। वे छोटे से छोटे कागज को भी जेब में रख लेते हैं और कूड़ेदान मिलने पर ही उसे फेंकते हैं। आंध्र प्रदेश में स्वच्छ आंध्र कॉरपोरेशन की स्थापना कर विभिन्न स्वच्छता कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। मुख्यमंत्री ने आरोप लगाया कि पिछली सरकारों ने स्वच्छता पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया, जिसके कारण सड़कों पर टनों कचरा जमा हो गया था। राज्य में हर

महीने को तीसरे शनिवार को स्वर्ण आंध्रदृश्य आंध्र कार्यक्रम को जन आंदोलन की भावना के साथ आयोजित किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि वह स्वयं हर महीने इस कार्यक्रम में भाग लेते हैं और पिछले दो वर्षों में पूरे राज्य में स्पष्ट बदलाव दिखाई दे रहा है। स्वच्छ सर्वेक्षण रैंकिंग में राज्य के शहर और गांव भी शानदार प्रदर्शन कर रहे हैं। पुरस्कार पाने वालों को बधाई देते हुए उन्होंने कहा कि 22 श्रेणियों में 130 राज्य स्तरीय और 2,044 जिला स्तरीय पुरस्कार दिए जा रहे हैं। स्वच्छ नगरपालिकाओं, ग्राम पंचायतों, स्कूलों, अस्पतालों, बस स्टैंडों और उद्योगों को स्वच्छता के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। सफाई कर्मचारियों और ग्रीन एंबेसडरों को भी सम्मानित किया जा रहा है। उन्होंने स्वच्छ आंध्र अभियान के



समर्थन में देशभर से करीब 12,000 खिलाड़ियों और धावकों के शामिल होने की सराहना की। मुख्यमंत्री ने कहा कि स्वच्छता केवल सरकार की जिम्मेदारी नहीं है। स्कूलों, अस्पतालों और पार्कों को स्वच्छ रखने के लिए सामाजिक जिम्मेदारी की भावना जरूरी है। पांच करोड़ लोगों की भागीदारी से यह एक बड़ा जन आंदोलन बन सकता है। मुख्यमंत्री ने कहा कि स्वच्छता का अर्थ केवल सड़कों को साफ रखना नहीं है। व्यक्तिगत

स्वच्छता, स्वास्थ्य और विचारों में भी स्वच्छता होनी चाहिए। कचरे को समस्या मानने के बजाय सरकार इसे संपदा में बदलने और बिजली उत्पादन की दिशा में काम कर रही है। कचरे से खाद और बायोगैस तैयार कर आंध्र प्रदेश को सर्कुलर इकोनॉमी की दिशा में आगे बढ़ाया जा रहा है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार जीरो-गार्बेज आंध्र प्रदेश के लक्ष्य पर काम कर रही है। पूरे राज्य में ठोस कचरा एकत्र करने के लिए स्वच्छ रथ चलाए जा रहे हैं। ई-ऑटो, पुशकार्ट और मशीनीकृत सड़क सफाई जैसी सुविधाएं भी शुरू की गई हैं। नए कचरे को जमा होने से रोकने के लिए इंटीग्रेटेड सॉलिड वेस्ट मैनेजमेंट केंद्र स्थापित किए गए हैं। मैजिक ड्रेन, सोक पिट और कंपोस्ट पिट जैसी नवीन व्यवस्थाएं लागू की जा रही हैं।

कैप्टन मच्छर ने पीएम मोदी को बताया कॉकपिट हमले का पूरा घटनाक्रम

भारतीय वे हैं जो दूसरों को बचाने के लिए अपनी जान जोखिम में डाल देते : पीएम

नई दिल्ली, एजेंसी

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शुक्रवार को कैप्टन रिमि मच्छर से वीडियो कॉल के जरिए बात की। कैप्टन मच्छर ने दुबई से तेल अवीव जा रही फ्लाईडुबई की उड़ान में अपने सह-पायलट के हमले को नाकाम करते हुए 180 लोगों की जान बचाई थी। प्रधानमंत्री ने उनके साहस, सूझबूझ और संयम की सराहना की। प्रधानमंत्री ने कहा कि पूरा देश कैप्टन मच्छर के लिए प्रार्थना कर रहा है।

बातचीत के दौरान कैप्टन भावुक हो गए और उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री से बात करना उनके लिए बेहद खास पल है। प्रधानमंत्री ने कैप्टन मच्छर से पूछा बताइए, आप कैसे हैं? अब आपकी तबीयत कैसी है? इस पर कैप्टन ने जवाब दिया सब ठीक है सर। सब ठीक है। देखिए, पूरा देश आपके लिए प्रार्थना कर रहा है। हर जगह लोग आपके लिए महामृत्युंजय मंत्र का जाप कर रहे हैं। आपका साहस, आपका धैर्य और आपकी सूझबूझ मेरा मतलब है, आपने एक पल के अंश में फैसला लिया और इतने



लोगों की जान बचा ली। पूरा देश गर्व से कह सकता है कि हम भारतीय जान लेने वाले लोग नहीं हैं, हम जान बचाने वाले लोग हैं।



आपके शरीर पर इतना बड़ा घाव था, उस समय आप जीवन और मृत्यु की लड़ाई लड़ रहे थे। और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि

आपने 140 करोड़ देशवासियों का सम्मान बढ़ाया और इसी वजह से मुझे गर्व महसूस होता है। कल मुझे भूपेंद्र भाई (स्मित के पिता) से बात करने का अवसर मिला, गीता बेन (स्मित की मां) से बात की, सोनल बेन (स्मित की पत्नी) से बात की। झावर और बांबी को बात नहीं हो सकती, लेकिन मैंने गीता बेन से कहा कि आपका नाम गीता है, लेकिन आपने पूरी तरह कृष्ण की गीता को अपने जीवन में उतार लिया और उसी गीता के मूल्यों के अनुसार स्मित का जीवन बनाया।

मैं सिर्फ हनुमान चालीसा का जाप कर रहा था

प्रधानमंत्री से कहा जब भी मुझे दर्द होता है, मैं बस हनुमान चालीसा का जाप करता हूँ। उस समय भी मैं सिर्फ हनुमान चालीसा का जाप कर रहा था। और मुझे पता है कि भगवान मेरे साथ हैं। मैंने एक पल के लिए भी नहीं सोचा था कि मैं कभी आपसे बात कर पाऊंगा। मैंने कभी नहीं सोचा था। बातचीत के दौरान कैप्टन रिमि भावुक हो गए और उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी से बात करना उनके लिए बेहद खास पल है। कैप्टन रिमि ने प्रधानमंत्री मोदी से कहा कि वह उनके सबसे बड़े आदर्श हैं।

संपादकीय

पाबंदियाँ नहीं, सुरक्षा चाहिए

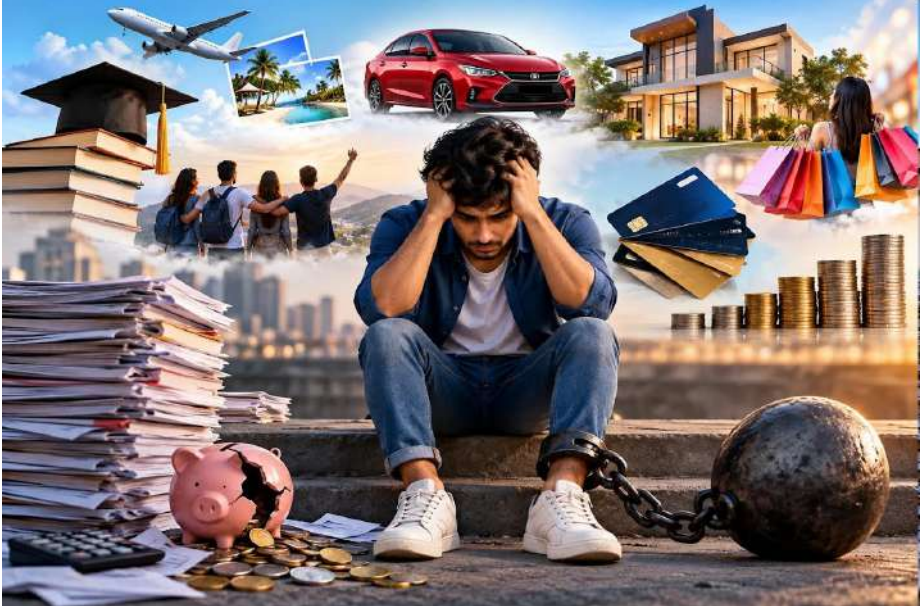
“अंधेरा होने के बाद बाहर मत निकलो। सुनसान जगहों पर मत जाओ। अनजान लोगों से मत मिलो। अकेले यात्रा मत करो। अपनी पसंद के कपड़े मत पहनो। अपने ही कॉलेज की आलोचना मत करो। ऑनलाइन कक्षाओं में चले जाओ। लेकिन ऑनलाइन अपने अधिकारों के लिए आवाज उठाना बंद कर दो। अपनी सुरक्षा सुनिश्चित करने की कुछ जिम्मेदारी तुम्हारी भी है।” ये वे पाबंदियाँ और सलाह हैं, जिनका सामना महिलाएँ अपने रोजमर्रा के जीवन में करती हैं। आखिर महिलाओं को इतनी सारी पाबंदियाँ और हिदायतें क्यों माननी चाहिए? क्या किसी महिला की स्वतंत्रता सीमित करना ही उसकी सुरक्षा का तरीका है? समाज में अब ये सवाल लगातार उठ रहे हैं। महिलाएँ मांग कर रही हैं कि उनकी स्वतंत्रता पर अंकुश लगाने के बजाय ऐसी परिस्थितियाँ बनाई जाएँ, जहाँ उन्हें सुरक्षित माहौल मिल सके। दिल्ली—एनसीआर में लगातार सामने आ रही यौन हिंसा की घटनाओं पर सुप्रीम कोर्ट ने भी चिंता व्यक्त की है।

सुप्रीम कोर्ट ने सवाल उठाया कि 2012 के निर्भया कांड के बाद भी महिलाओं के लिए असुरक्षा की स्थिति क्यों बनी हुई है। स्वरूप नगर में एक बच्ची के साथ यौन हिंसा और हत्या तथा ग्रेटर नोएडा से दिल्ली आ रही बस में एक बच्ची के साथ यौन हिंसा जैसी घटनाओं ने दिल्ली सरकार को झकझोर दिया है। दिल्ली और पंजाब के विश्वविद्यालयों के छात्र—छात्राएँ बार—बार विरोध प्रदर्शन कर यह सवाल उठा रहे हैं कि 2012 के बाद से महिलाओं की सुरक्षा के मामले में आखिर कितना बदलाव आया है। सरकारें नई कानून व्यवस्था, प्रक्रियाओं और सीसीटीवी कैमरों जैसी व्यवस्थाओं का हवाला देते हुए दावा करती हैं कि महिलाओं की सुरक्षा के लिए अनेक कदम उठाए गए हैं। विश्वविद्यालय प्रशासन भी इसी तरह के आश्वासन देता है। लेकिन यहाँ दोनों पक्षों के अनुभवों और समझ के बीच एक बड़ा अंतर दिखाई देता है।

एक तरफ सरकार और संस्थाएँ कहती हैं कि वे कार्रवाई कर रही हैं, वहीं दूसरी ओर युवा महिलाएँ अपने रोजमर्रा के अनुभवों के आधार पर कहती हैं कि उन्हें आज भी पर्याप्त सुरक्षा महसूस नहीं होती। वर्ष 2011—12 में उच्च शिक्षा में महिलाओं का सकल नामांकन अनुपात 19 प्रतिशत था, जबकि पुरुषों का 22 प्रतिशत। 2017—18 तक महिलाओं का सकल नामांकन अनुपात पुरुषों से अधिक हो गया और यह बढ़त आगे भी बनी रही। शिक्षा, रोजगार और स्वतंत्रता की दिशा में युवा महिलाएँ ऐतिहासिक प्रगति कर रही हैं। लेकिन उनकी सुरक्षा की जिम्मेदारी निमाने वाली संस्थाएँ अब भी पुरानी सोच में फँसी हुई हैं। अंधेरा होने के बाद बाहर निकलने के लिए युवा महिलाओं पर आज भी अनेक पाबंदियाँ लगाई जाती हैं। पिछली पीढ़ियों ने शिक्षा और रोजगार के लिए शायद ऐसी परिस्थितियों को सहन किया होगा। लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि आज के विद्यार्थियों को भी यह विचार स्वीकार करना चाहिए कि पुरुषों की हिंसा का समाधान महिलाओं के व्यवहार को नियंत्रित करना है। इसके बजाय वे व्यवस्था में बदलाव की मांग कर रही हैंकूसड़कों पर पर्याप्त रोशनी, सुरक्षित परिवहन और बेहतर पुलिस व्यवस्था जैसी सुविधाओं की मांग। जब युवा महिलाएँ रात में सुरक्षित और स्वतंत्र रूप से घूमने के अधिकार के लिए रैलियों निकालती हैं, तो उनके चारों ओर बड़ी संख्या में पुलिस बल तैनात कर दिया जाता है। लेकिन विडंबना यह है कि जब महिलाओं को वास्तव में तत्काल मदद की जरूरत होती है, तब अक्सर एक भी पुलिसकर्मी नजर नहीं आता। अपराधियों में कानून का डर पैदा करने के साथ—साथ यह समझना भी जरूरी है कि ऐसी परिस्थितियों ने भारत में महिलाओं के जीवन की गुणवत्ता को सीमित किया है। कई अ्ध ययनों ने इस बात को सामने रखा है। चेन्नई में हुए एक अ्ध ययन के अनुसार अधिकांश महिलाएँ दोपहर 3 से 5 बजे के बीच यात्रा करती हैं, जबकि पुरुष शाम 5 से 7 बजे के बीच अधिक यात्रा करते हैं। मुंबई पर किए गए एक अन्य अध्ययन में पाया गया कि अपेक्षाकृत सुरक्षित माने जाने वाले शहर में केवल 31 प्रतिशत सड़कों पर पर्याप्त रोशनी है। दिल्ली में हुए एक अध्ययन के अनुसार सुरक्षित यात्रा सुनिश्चित करने के लिए महिलाएँ कम रैंक वाले कॉलेजों को भी चुन रही हैं। ‘पिक टैक्स’कूमहिलाओं के लिए बनाए गए उत्पादों और सेवाओं पर अतिरिक्त कीमत वसूलने की व्यवस्थाकृमी व्यापक रूप से मौजूद है। अगर महिलाएँ इसके खिलाफ आवाज उठा रही हैं, तो यह स्वाभाविक है कि वे भविष्य में भेदभाव के अन्य रूपों को भी चुनौती देंगी। सुरक्षा कॉलेज के गेट पर खत्म नहीं होनी चाहिए। एक महिला को रात 10 बजे अपने हॉस्टल से निकलकर कैफे तक पैदल जाने, दोस्तों से मिलने और सार्वजनिक परिवहन से वापस घर लौटने की स्वतंत्रता होनी चाहिए। इसके लिए उसे किसी की अनुमति लेने की जरूरत नहीं होनी चाहिए। उसे यह सफाई देने की जरूरत नहीं होनी चाहिए कि वह बाहर क्यों गई थी या किसके साथ थी। तभी कहा जा सकता है कि उसे वास्तविक स्वतंत्रता और सुरक्षा मिली है। निर्भया कांड के बाद केंद्र सरकार ने खतरनाक इलाकों की पहचान करने के लिए एक समिति बनाने की घोषणा की थी। अंधेरे वाले इलाकों की पहचान करने के लिए फिर एक नई समिति की जरूरत क्यों है? जब महिलाओं की सुरक्षा से जुड़े पहले से चिन्हित मुद्दों का समाधान नहीं हुआ है, तो नए सर्वेक्षण, नई रिपोर्ट और नए आश्वासन क्यों? निर्भया कांड के 14 साल बाद भी वही सवाल सुप्रीम कोर्ट के सामने दोबारा उठना सरकारों की कार्यप्रणाली और उनकी नाकामी को उजागर करता है।

युवाओं का पीछा करता कर्ज का जाल

आसान कर्ज की सुविधा से वित्तीय बोझ बढ़ रहा है वित्तीय अनुशासन के सामने चुनौतियां बढ़ रही हैं भविष्य के लक्ष्यों पर पड़ रहा प्रतिकूल प्रभाव जागरूकता ही समस्या से निपटने की कुंजी है



हाल के समय में युवाओं के बीच कर्ज लेने की प्रवृत्ति तेजी से बढ़ रही है। पहले आमतौर पर कर्ज केवल आपातकालीन जरूरतों के लिए लिया जाता था। लेकिन आज उपभोक्ता वस्तुओं, विलासितापूर्ण जीवनशैली, ऑनलाइन खरीदारी, यात्राओं और समारोहों के लिए कर्ज लेना तेजी से आम होता जा रहा है। आसानी से उपलब्ध कर्ज सुविधाएँ, वित्तीय सेवाओं की तत्काल मंजूरी और आकर्षक प्रचार अभियान अ्धिाक से अधिक युवाओं को कर्ज लेने की ओर आकर्षित कर रहे

हैं। हालांकि ऐसे कर्ज अस्थायी राहत दे सकते हैं, लेकिन लंबे समय में वे गंभीर वित्तीय समस्याओं का कारण बन सकते हैं। तकनीकी प्रगति ने कर्ज तक पहुंच को काफी आसान बना दिया है। पहले लोगों को बैंकों के चक्कर लगाने पड़ते थे और लंबी प्रक्रियाओं से गुजरना पड़ता था। आज मोबाइल फोन के माध्यम से कुछ ही मिनटों में कर्ज मंजूर हो सकता है। कुछ युवा अपनी आय, बचत और कर्ज चुकाने की क्षमता जैसे महत्वपूर्ण पहलुओं का पूरी तरह

आकलन किए बिना कर्ज ले लेते हैं। तत्काल जरूरतों को पूरा करने के उद्देश्य से लिए गए फैंसले बाद में मासिक किस्तों के रूप में बोझ बन सकते हैं। शुरुआत में छोटी रकम का लगने वाला कर्ज धीरे-धीरे बड़ी वित्तीय देनदारी में बदल सकता है। पर्यवेक्षकों के अनुसार, सामाजिक मीडिया भी इस स्थिति को बढ़ावा देने वाले कारकों में से एक है। युवा तेजी से उन जीवनशैलियों से प्रभावित हो रहे हैं, जिन्हें वे दूसरों को प्रदर्शित करते हुए देखते हैं और उसी तरह जीवन

जीने की इच्छा विकसित करते हैं। महंगे उत्पादों, वाहनों, छुट्टियों और भव्य खर्चों की बढ़ती चाहत अक्सर व्यक्ति की आय से अ्धिाक खर्च का कारण बनती है। ऐसे खर्चों को पूरा करने के लिए कर्ज लेना धीरे-धीरे आदत बन सकता है। अस्थायी आकर्षणों के लिए लिया गया कर्ज दीर्घकालिक वित्तीय स्थिरता को कमजोर कर सकता है। कर्ज का बोझ केवल वित्तीय समस्याओं तक सीमित नहीं रहता, बल्कि मानसिक तनाव भी बढ़ा सकता है। मासिक किस्तों, ब्याज के बोझ और अपर्याप्त आय के कारण कई युवाओं में चिंता पैदा हो सकती है। कुछ लोगों को नींद की समस्या, निराशा और भविष्य को लेकर भय का सामना करना पड़ सकता है। वित्तीय दबाव व्यक्तिगत जीवन, पारिवारिक संबंधों और कार्यस्थल पर प्रदर्शन को भी प्रभावित कर सकता है। यदि कर्ज को नियंत्रण में नहीं रखा गया, तो जीवन की समग्र गुणवत्ता में गिरावट आने का खतरा रहता है।

कर्ज का प्रभाव युवाओं की भविष्य की योजनाओं पर भी स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा है। जो आय उच्च शिक्षा, स्वरोजगार, व्यवसाय शुरू करने या घर बनाने में इस्तेमाल की जा सकती

थी, उसका बड़ा हिस्सा कर्ज चुकाने में खर्च हो रहा है। इसके परिणामस्वरूप भविष्य के अवसर सीमित हो सकते हैं। जिस उम्र में युवाओं को वित्तीय आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ना चाहिए, उसी समय भारी कर्ज का बोझ उनके विकास की राह में बाधा बन सकता है। हालांकि, यह कहना उचित नहीं होगा कि सभी प्रकार के कर्ज नुकसानदायक होते हैं। शिक्षा, कृषि, व्यवसाय के विस्तार और घर बनाने जैसे उत्पादक उद्देश्यों के लिए लिया गया कर्ज भविष्य में लाभकारी हो सकता है। समस्या कर्ज लेने में नहीं, बल्कि उसके इस्तेमाल के तरीके में है। अपनी वास्तविक जरूरत, आय और कर्ज चुकाने की क्षमता पर विचार किए बिना लिया गया कर्ज मुश्किलें पैदा करने की अधिक संभावना रखता है। इसलिए युवाओं में वित्तीय जागरूकता बढ़ाने और उन्हें जिम्मेदारी से ऋण का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है। शैक्षणिक संस्थानों में वित्तीय प्रबंधन को लेकर जागरूकता पैदा करना भी समय की मांग बन गया है। युवाओं को कम उम्र से ही आय, खर्च, बचत, निवेश और कर्ज प्रबंधन के बारे में सिखाया जाना चाहिए। परिवारों को भी बच्चों को धन का महत्व समझाना चाहिए और वित्तीय अनुशासन के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। समाज में जिम्मेदारी से खर्च करने की संस्कृति को बढ़ावा देने से अनावश्यक कर्ज लेने की समस्या को काफी हद तक कम किया जा सकता है। कर्ज लेने से पहले युवाओं को सावधानीपूर्वक विचार करना चाहिए कि क्या वास्तव में उस

कर्ज की आवश्यकता है। हर इच्छा को तुरंत पूरा करने की कोशिश करने के बजाय दीर्घकालिक लाभ को ध्यान में रखकर निर्णय लेना चाहिए। अपनी आय के अनुसार खर्च करना, आय का एक हिस्सा बचाना और आपातकालीन निधि ा बनाए रखना वित्तीय सुरक्षा में महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है। आसानी से उपलब्ध कर्ज के आकर्षण में बहने के बजाय जिम्मेदारी से निर्णय लेना बेहद जरूरी है। आर्थिक रूप से सुरक्षित युवा किसी भी राष्ट्र के विकास की मजबूत नींव होते हैं। ऐसी स्थिति जिसमें युवा अपने जीवन की शुरुआत ही कर्ज के बोझ के साथ करें, न तो उनके लिए स्वस्थ है और न ही समाज के लिए लाभकारी। कमाई के साथ—साथ युवाओं को वित्तीय अनुशासन, बचत और जिम्मेदारी से खर्च करने जैसे मूल्यों को भी अपनाना चाहिए। यदि केवल आवश्यकता पड़ने पर कर्ज लेने और समय पर उसे चुकाने की संस्कृति को बढ़ावा दिया जाए, तो व्यक्तिगत, पारिवारिक और सामाजिक स्तर पर सकारात्मक परिणाम प्राप्त किए जा सकते हैं।

युवाओं में बढ़ती कर्ज की संस्कृति को एक चेतावनी के रूप में देखा जाना चाहिए। अस्थायी सुख—सुविधाओं के लिए भविष्य को गिरवी रखने की प्रवृत्ति को कम करना जरूरी है। वित्तीय जागरूकता, अनुशासन और जिम्मेदारी से निर्णय लेना इस समस्या का दीर्घकालिक समाधान खोजने के लिए आवश्यक है। स्वस्थ वित्तीय आदतें विकसित होने पर ही युवाओं का भविष्य अ्धिाक सुरक्षित और स्थिर बनाया जा सकता है।

माता-पिता के संस्कार ही बच्चों के चरित्र की नींव बनते हैं

ज्ञान का आर्थिक और कार्यक्षेत्रीय प्रभाव भी बहुत बड़ा है। जब कर्मचारी और पेशेवर लोग ज्ञान को केवल हाशिये पर ना रखकर (याने समाज, राजनीति या मुख्य्ारा से कटकर ज्ञान उपेक्षित स्थिति में पहुँच जाए जहाँ उनका प्रभाव कम हो जाता है ऐसी स्थिति में न रखते हुये) व्यवहार में डालते हैं, तो कार्यालयों में भरोसा, पारदर्शिता और सहयोग बढ़ते हैं। ऐसे संगठन जहाँ कर्मचारी नैतिकता और व्यावहारिक सोच के साथ निर्णय लेते हैं, वहाँ लम्बे समय में भ्रष्टाचार, निर्णय,त्रुटि और संसाधन.विनाश कम होते हैं। परिणाम स्वरूप आर्थिक उत्पादन स्थिर और टिकाऊ बनता है, क्योंकि सतही कुशलता के बजाय दीर्घकालिक जवाबदेही व गुणवत्ता प्राथमिकता पाती है। ज्ञान का पारिवारिक और सामुदायिक जीवन पर भी प्रभाव गहरा होता है। ज्ञान का आचरण अगर घरों से शुरू हो तो पीढ़ियों तक उसका प्रभाव जाता है। माता.पिता ईमानदारी,

समयपालन, दया, न्याय और करुणा जैसे सात्विक सिद्धान्तों को बच्चों में आचरण के रूप में आरोपित करते हैं, तो यही सिद्धांत बच्चों की आदतें बन जाती हैं। समुदायों में ऐसी पारिवारिक संस्कृतियाँ सामाजिक पूंजी बनाती हैं। जिससे आपसी प्रेम, करुणा, न्याय, विश्वास, पड़ोसियों की सहायता और साझा नैतिक मानक जैसी बातें असरदार होकर सामूहिक जीवन को सुदृढ़ करते हैं और संकट काल में सहारा बनते हैं, पनपते हैं। ज्ञान का नेतृत्व और नीति.निर्माण में परिवर्तन का भी ध्यान रखना होगा। समाज के विकास में नेताओं की भूमिका बहुत ही प्रभावशाली होती है यह बात हम सब ही जानते हैं। नेता और नीति.निर्माता यदि ज्ञान को केवल वक्तव्य के रूप में नहीं रखें, बल्कि उसको व्यवहारिक परीक्षणों और समुदाय.फीडबैक से जोड़ें, तो नीतियाँ व्यवहार्य और निष्पादनयोग्य बनती हैं। नेतृत्व का लोक.हित पर केन्द्रित

आचरण जनता में भरोसा जगाता है। पारदर्शी निर्णय.प्रक्रिया और जवाबदेही नीतिगत त्रुटियों को कम कर देती है तथा समाज में हिस्सेदारी और सहभागिता को बढ़ाती है। ज्ञान का विज्ञान एवं तकनीक का मानवीय अनुप्रयोग भी बहुत ही मायने रखता है। तकनीकी और वैज्ञानिक प्रगति तभी समाज के लिये सार्थक रहती है जब उसे मानवीय जरूरतों और नैतिक मानकों के अनुरूप लागू किया जाए। केवल तकनीकी कौशल का होना पर्याप्त नहीं बल्कि उनका उपयोग प्रेम, करुणा, न्याय और समावेशन बढ़ाने में भी होना चाहिए। इस प्रकार ज्ञान का आचरण में रूपांतरण तकनीकी नवाचारों को समाजोपयोगी बनाता है और उनका दुरुपयोग या अनपेक्षित हानियाँ घटती हैं। याने केवल तकनीकी और वैज्ञानिक प्रगति का होना पर्याप्त नहीं है बल्कि वह नैतिक और मानवीय मूल्यों का संरक्षक भी होना चाहिए। ज्ञान का व्यक्तिगत संतोष और

मानसिक स्वास्थ्य पर भी प्रभाव रहता है। जब व्यक्ति अपने ज्ञान को जीवन में उतारता है और इससे सकारात्मक परिणाम देखता है, तो उसे आंतरिक संतोष और आत्म.सम्मान मिलता है। यह संतोष केवल बाहरी उपलब्धियों पर निर्भर नहीं होता। इससे मानसिक स्वास्थ्य बेहतर होता है, अपराध प्रवृत्ति घटती है और लोगों में सामाजिक जुड़ाव बनता है। स्व.अधिगम का यह चक्र (सीखना, लागू करना, परिणाम देखना) आत्म.प्रेरणा और दीर्घकालिक विकास को बढ़ाता है। व्यक्तिगत संतोष और मानसिक स्वास्थ्य के बगैर सामाज की उन्नति नहीं होती। ज्ञान का संस्कृति.निर्माण और भविष्य की पीढ़ियाँ निर्माण करने में भी बहुत महत्त्वता है। अंततः ज्ञान का आचरण जब समुदायों में घुलमिल जाता है तो वह संस्कृति का हिस्सा बन जाता है। फिर यह नए रीति.रिवाज, शिक्षा.पद्धतियाँ और नैतिक मानक बनते हैं। ऐसे सांस्कृतिक परिवर्तन पीढ़ियों तक

चलते हैं और भविष्य के नागरिकों को केवल जानकारी का भंडार नहीं, बल्कि यह सीख भी देते हैं कि ज्ञान का उपयोग कैसे किया जाता है। यही वह विरासत है जो समाज को टिकाऊ, न्यायपूर्ण और सहानुभूतिशील बनाकर आने वाली पीढ़ियों को समृद्ध अवसर देती है। इस तरह राष्ट्र की गरिमा को बनाए और बढ़ाये रखने में ज्ञान की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। हमें अब निर्णय लेना होगा कि क्या हम केवल और अधिक जानकारी के भण्डार बनाने पर टिके रहेंगे?, या जो कुछ पहले से हमारे पास है उसे गहराई से आत्मसात कर वास्तव में मानवीय दुनिया का निर्माण करेंगे? ज्ञान का असली अर्थ तब उजागर होता है जब वह ज्ञान हमारे आचरण में उतरकर, हमारे समुदाय और हमारी दृष्टि में परिवर्तन लाता है। इमाम अली (अ.) का यह संदेश (ज्ञान दो तरह का होता है, एक आत्मा में रच बस जाए, और एक जो



—डॉ. मोहम्मदशकील ताजमोहम्मद जाफरी

(शकील मंवर), मंचर, पुणे (महाराष्ट्र), भारत

सिर्फ सुना हो। और सुना सुनाया इल्म लाभ नहीं देता, जब तक वह दिल में सुदृढ़ न हो।—हिन्दी ग्रन्थ, नहजुल बलागह, उपदेश 338, पृष्ठ 779) केवल किसी एक धर्म का नहीं, बल्कि अनेक परंपराओं और आधुनिक मनोविज्ञान का साझा उपहार है। और यही वह धरातल है जिस पर आज के शिक्षण और जीवन—व्यवहार का निर्माण होना चाहिए।

बलात्कारी समाज, बलात्कारी संस्कृति क्या हमारी है?

जिस दिन देश में महिलाएं आधी रात को भी सड़कों पर निर्भय होकर चल सकेंगी, उसी दिन समझना चाहिए कि इस देश को वास्तविक स्वतंत्रता मिली है।“ महात्मा गांधी क्या आपने पिछले दस दिनों से दिल्ली के लेडी श्रीराम कॉलेज, गर्गी कॉलेज, कमला नेहरू कॉलेज और अन्य कॉलेजों की छात्राओं द्वारा किए जा रहे विरोध ा प्रदर्शनों को देखा है? क्या आपने सुना है कि वे लड़कियां क्या कह रही हैं? अगर हम सच में उनकी बात सुनें और समझें, तो इस देश और पूरी पुरुष—प्रधान दुनिया को शर्म से सिर झुका लेना चाहिए। जो लोग उनकी बात समझते हैं और जो पुरुष अभी भी संवेदनशील इंसान बने हुए हैं, उनके लिए अब समय आ गया है कि वे वर्षों से सवाल उठाती आ रही करोड़ों महिलाओं की आवाज के साथ अपनी आवाज मिलाएं।

दौरान 17 वर्षीय एक कॉलेज छात्रा ने कहा, “सड़कों पर चलते समय मुझे बहुत डर लगता है। 12 साल के बच्चे से लेकर बुजुर्ग तक, हर जगह ऐसे पुरुष हैं जो महिलाओं को लालच भरी नजरों से देखते हैं और उन्हें एक वस्तु की तरह समझते हैं। उनकी नजरें, अश्लील व्यवहार और यौन उत्पीड़न देखकर डर लगता है कि वे कम मुझ पर हमला कर देंगे और मेरे साथ क्या कर देंगे।” एक अन्य लड़की ने कहा, “मेरे पिता हर समय यह पता लगाते रहते हैं कि मैं कहाँ हूँ। मुझे उन्हें लगातार बताना पड़ता है कि मैं कहाँ हूँ, क्या कर रही हूँ और किसके साथ हूँ। थोड़ा अंधेरा होते ही मुझे बाहर जाने की अनुमति नहीं होती। मैं सोचती हूँ कि अगर मैं बेटा होती तो क्या मुझ पर इस तरह की पाबंदियां होती? मेरी हर गतिविधि ा को नियंत्रित करना और बिल्कूल भी स्वतंत्रता न होना मेरे लिए बहुत मुश्किल और घुटन भरा है।”

एक अन्य लड़की ने कहा, “मैं अपनी नहीं हूँ। मैं इंसान तक नहीं हूँ।” सिंधान द्वारा दिए गए मेरे कोई मौलिक अधिकार नहीं हैं। मुझे ऐसे परिवार, संस्कृति और विवाह की व्यवस्था नहीं चाहिए, जो यह मानती है कि मेरे पास न सोचने की क्षमता है, न बुद्धि है, न दिल है और मुझे हमेशा दूसरों के अधीन रहना चाहिए। मुझे पितृसत्ता बिल्कूल नहीं चाहिए।” “एक कचौरी, दो समोसे, इन मर्दों का क्या भरोसा?” “हमारी स्कर्ट छोटी नहीं, इन मर्दों की सोच छोटी है।”

“तोड़कर रख दो वो समाज, जिसमें नारी आज भी बंदी है।” “पितृसत्ता का नाश हो! महिलाएं वस्तु नहीं हैं, वे क्रांति हैं।” “बलात्कारियों को सजा दो, लड़कियों को नहीं।” “यह महिलाओं की सुरक्षा का मुद्दा नहीं है, यह पुरुषों द्वारा की जाने वाली हिंसा का मुद्दा है” जैसे नारे दिल्ली की सड़कों पर गूंजते रहे। इन छात्राओं ने मीम्स, पोस्टरों, रील्स और गीतों के जरिए बेहद रचनात्मक तरीके से हारथ के साथ जागरूकता पैदा की और पुरुष—प्रधान समाज का गंभीर विश्लेषण भी किया। पीढ़ी—जेड की इन लड़कियों ने समाज को एक बार फिर स्पष्ट संदेश दिया कि उन्हें केवल इंस्टाग्राम रील्स बनाने वाली, राजनीति से अनजान या सामाजिक मुद्दों से बेपरवाह पीढ़ी समझने की भूल न की जाए।

कॉलेजों में, दिल्ली में पीढ़ी—जेड की छात्राएँ अब विश्वविद्यालयों, सड़कों और पार्कों के आसपास बेहतर स्ट्रीट लाइटिंग की मांग कर रही हैं। वे अधिक डीटीसी और शटल बसें, महिलाओं के लिए रियायती मेट्रो पास, काम करने वाले सार्वजनिक शौचालय और मासिक धर्म संबंधी स्वास्थ्य सुविधाओं की मांग कर रही हैं। वे चाहती हैं कि रात के समय सुरक्षित यात्रा की व्यवस्था हो और बिना कर्फ्यू तथा नैतिक कर्जों के सार्वजनिक स्थानों पर गूंजते रहे। इन छात्राओं ने मीम्स, पोस्टरों, रील्स और गीतों के जरिए बेहद रचनात्मक तरीके से हारथ के साथ जागरूकता पैदा की और पुरुष—प्रधान समाज का गंभीर विश्लेषण भी किया। पीढ़ी—जेड की इन लड़कियों ने समाज को एक बार फिर स्पष्ट संदेश दिया कि उन्हें केवल इंस्टाग्राम रील्स बनाने वाली, राजनीति से अनजान या सामाजिक मुद्दों से बेपरवाह पीढ़ी समझने की भूल न की जाए।

कॉलेजों में, दिल्ली में पीढ़ी—जेड की छात्राएँ अब विश्वविद्यालयों, सड़कों और पार्कों के आसपास बेहतर स्ट्रीट लाइटिंग की मांग कर रही हैं। वे अधिक डीटीसी और शटल बसें, महिलाओं के लिए रियायती मेट्रो पास, काम करने वाले सार्वजनिक शौचालय और मासिक धर्म संबंधी स्वास्थ्य सुविधाओं की मांग कर रही हैं। वे चाहती हैं कि रात के समय सुरक्षित यात्रा की व्यवस्था हो और बिना कर्फ्यू तथा नैतिक कर्जों के सार्वजनिक स्थानों पर गूंजते रहे। इन छात्राओं ने मीम्स, पोस्टरों, रील्स और गीतों के जरिए बेहद रचनात्मक तरीके से हारथ के साथ जागरूकता पैदा की और पुरुष—प्रधान समाज का गंभीर विश्लेषण भी किया। पीढ़ी—जेड की इन लड़कियों ने समाज को एक बार फिर स्पष्ट संदेश दिया कि उन्हें केवल इंस्टाग्राम रील्स बनाने वाली, राजनीति से अनजान या सामाजिक मुद्दों से बेपरवाह पीढ़ी समझने की भूल न की जाए।

जंगलों में छिपे आतंकियों की शामत

सुरक्षाबलों ने सितंबर में पांच पाकिस्तानी दहशतगर्दों को किया ढेर

जम्मू, 2 अक्टूबर (एजेंसियाँ)। एक तरफ पहाड़ों में आतंकियों की घेराबंदी, दूसरी तरफ पुख्ता खुफिया सूचनाओं पर दबाव और तीसरी तरफ सुरक्षित ठिकाना नहीं मिलने देना व वरिष्ठ अधिकारियों का मौके पर पहुंचकर अभियानों की निगरानी। जम्मू से कश्मीर तक चले आतंकियों के खिलाफ अभियानों में यही रणनीति दिखी। इस रणनीति के तहत सितंबर में सेना ने पांच पाकिस्तानी आतंकियों को मार गिराया। इसमें बडगाम के यूसमर्ग में यासिर के बाद लश्कर-ए-ताइबा का आतंकी कमांडर हाशिम मूसा, जबकि जम्मू क्षेत्र में मुस्तफा, सद्दाम मारा गया। सितंबर सुरक्षाबलों के लिए कामयाबी वाला महीना रहा। इसमें नामी आतंकियों का सफाया किया। बडगाम, पुंछ, राजोरी, कटुआ, उधमपुर, रियासी और डोडा, किश्तवाड़ में आतंकियों की तलाश में करीब 12 एंटी टेरर ऑपरेशन चलाए गए। इनसे आतंकियों को एक जगह घेरने के साथ उनकी आवाजाही के रास्तों पर दबाव बढ़ाना था। दूसरे इलाकों में भी ठिकाना नहीं मिलने देने



सुरक्षा एजेंसियों को 32 आतंकियों की तलाश

सुरक्षा एजेंसियां जम्मू-कश्मीर में सक्रिय या छिपे करीब 28 से 32 आतंकियों की तलाश कर रही हैं। पहले 70 से 100 आतंकियों के आंकड़े सामने आ रहे थे, लेकिन अब एजेंसियां इस संख्या को काफी कम मान रही हैं। अनुमान में चार आतंकियों तक का अंतर हो सकता है। स्थानीय आतंकियों की संख्या करीब पांच बताई जा रही है। इनमें तीन किश्तवाड़, एक डोडा-उधमपुर-कटुआ अश और एक दक्षिण कश्मीर में होने की जानकारी है।

की रणनीति के साथ सुरक्षाबल आगे बढ़े। दक्षिण पंर पंजाल क्षेत्र में दबाव का असर रहा

कि जिन जंगलों को आतंकियों ने पनाहगाह बनाया था वहीं उन्हें मौत दी।

370 और 35ए के मुद्दे पर पुंछ में भाजपा का हल्ला बोल सीएम उमर अब्दुल्ला का पुतला फूंक कर प्रदर्शन

पुंछ, 2 अक्टूबर (एजेंसियाँ)। जम्मू-कश्मीर के पुंछ में भारतीय जनता पार्टी की जिला इकाई ने नैशनल कॉन्ग्रेस सरकार के खिलाफ प्रदर्शन किया। प्रदर्शनकारियों ने पुंछ बस अड्डे पर मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला का पुतला फूँका और सरकार के खिलाफ नारेबाजी की। प्रदर्शन का नेतृत्व भाजपा जिला अध्यक्ष गुरदीप सिंह खालसा, पूर्व जिला अध्यक्ष राजेश रैना और जिला महासचिव सुनील शर्मा ने किया। इस दौरान भाजपा नेताओं और कार्यकर्ताओं ने नैशनल कॉन्ग्रेस सरकार पर चुनावी वादों को पूरा नहीं करने का आरोप लगाया। भाजपा नेताओं ने कहा कि नैशनल कॉन्ग्रेस सरकार विधानसभा में अनुच्छेद 370, 35ए और 1953 से पहले की स्थिति से जुड़े प्रस्ताव लाकर लोगों का ध्यान मूल मुद्दों से भटकाने का प्रयास कर रही है। उन्होंने कहा कि क्षेत्र के लोगों को बिजली, पानी और रोजगार जैसी बुनियादी सुविधाओं से जुड़ी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। प्रदर्शनकारियों ने कहा कि जम्मू-कश्मीर में अनुच्छेद 370 और 35ए की बहाली स्वीकार नहीं की जाएगी। उन्होंने केंद्र सरकार की ओर से 2019 के बाद जम्मू-कश्मीर में किए जा रहे विकास कार्यों का भी उल्लेख किया। भाजपा कार्यकर्ताओं ने कहा कि जम्मू-कश्मीर में एक विधान, एक संविधान और एक निशान की व्यवस्था कायम रहनी चाहिए। उन्होंने नैशनल कॉन्ग्रेस सरकार से लोगों से जुड़े बुनियादी मुद्दों पर ध्यान देने की मांग की।

इंदौर की छावनी सड़क में बाधक बने होटल और दुकानों पर फिर चले बुलड़ोजर

इंदौर, 2 अक्टूबर (एजेंसियां)। इंदौर में मास्टर प्लान की सड़कों को चौड़ा करने का काम हो रहा है। इसमें शहर के पुराने हिस्से छावनी क्षेत्र की सड़क भी शामिल हैं। सड़क की चौड़ाई की जद में आ रहे निर्माणों को शुक्रवार को फिर तोड़ा गया। आठ साल में दूसरी बार मथुरावाला बिल्डिंग को भी तोड़ा गया। इससे पहले तत्कालीन कलेक्टर आकाश त्रिपाठी की पहल पर छावनी सड़क को चौड़ा करने की कवायद की गई थी।

तब भी इस बिल्डिंग पर हथौड़े चले थे। यह बिल्डिंग पूर्व पार्षद भारत मथुरावाला की है। इस सड़क के लिए पाँच माह पहले 80 से ज्यादा निर्माण तोड़े गए थे। नगर निगम यहां

सड़क बना रहा है। जो निर्माण तोड़ना शेष थे, उन्हें हटाने के लिए शुक्रवार सुबह नगर निगम का अमला जेसीबी और पोकलेन के साथ मौके पर पहुंचा। बाधक निर्माणों के मालिकों को पहले ही नोटिस दिए गए थे, लेकिन उन्होंने स्वेच्छा से निर्माण नहीं तोड़े तो अफसरों ने उन्हें हटाने का फैसला लिया।

सुबह पहले कुछ हिस्सों को श्रमिकों की मदद से तोड़ा गया, फिर ऊपरी मंजिलों को पोकलेन की मदद से हटाया गया। इस दौरान सड़क का ट्रैफिक भी डायवर्ट कर दिया गया। मौके पर नगर निगम अफसरों के अलावा पुलिस बल भी तैनात था, ताकि निर्माण तोड़े जाने के दौरान विवाद की स्थिति न बने।

निरमा यूनिवर्सिटी के गर्ल्स हॉस्टल के पास गंदी हरकत, छात्रों ने काले कपड़े पहनकर मनाया 'ब्लैक डे'

अहमदाबाद, 2 अक्टूबर (एजेंसियाँ)। गुजरात के प्रतिष्ठित निजी विश्वविद्यालयों में शामिल निरमा यूनिवर्सिटी में एक वर्कर द्वारा अश्लील हरकत के बाद स्टूडेंट्स ने ब्लैक डे मनाया। निरमा यूनिवर्सिटी के एच4 गर्ल्स हॉस्टल के पास एक कथित अश्लील हरकत का वीडियो सामने आया है। इसमें एक कर्मचारी गंदी हरकत कर रहा है। इस वीडियो के फैलने के बाद छात्रों में गुस्सा भड़का। इसके बाद उन्होंने काले कपड़े पहनकर 'ब्लैक डे' मनाया। छात्रों ने मांग की कि प्रशासन जवाबदेही, निष्पक्ष जांच और तुरंत कार्रवाई करे।

निरमा यूनिवर्सिटी में यह घटना ऐसे वक्त पर सामने आई है जब यूनिवर्सिटी पहले से एक प्रोफेसर छात्र का कॉलर पकड़ने के लिए आलोचनाओं का सामना कर रही है। निरमा यूनिवर्सिटी के 1,000 से ज्यादा छात्रों ने कैम्पस में विरोध प्रदर्शन किया। उन्होंने काले कपड़े पहने थे और हाथों में प्लेकार्ड लिए हुए थे। वे गर्ल्स हॉस्टल की कंस्ट्रक्शन साइट पर एक कंस्ट्रक्शन वर्कर द्वारा की गई कथित अश्लील हरकत की निंदा की। पुलिस ने कहा कि वे वीडियो की जांच कर रहे हैं।

नवरात्र में वैष्णो देवी जाने वालों के लिए खुशखबरी नई दिल्ली-कटड़ा स्पेशल ट्रेन के फेरे बड़े



और 4 अक्टूबर को रात 11:45 बजे रवाना होगी। ट्रेन पानीपत, कुरुक्षेत्र, अंबाला कैंट, लुधियाना, जालंधर कैंट, पठानकोट कैंट, जम्मू तबी और शहीद कैप्टन तृषार महाजन रेलवे स्टेशनों पर रुकते हुए अगले दिन दोपहर 12 बजे कटड़ा पहुंचेगी। वापसी में ट्रेन संख्या 04082 श्री माता वैष्णो देवी कटड़ा-नई दिल्ली फेस्टिवल स्पेशल 3, 4 और 5 अक्टूबर को रात 9 बजे कटड़ा से रवाना होगी और अगले दिन सुबह 10 बजे नई दिल्ली पहुंचेगी। यात्रियों की सुविधा के लिए उत्तर रेलवे ने 12426 जम्मू तबी-नई दिल्ली राजधानी एक्सप्रेस में थर्ड एसी का एक अतिरिक्त कोच भी अस्थायी रूप से जोड़ने का फैसला किया है। यह अतिरिक्त कोच 4, 5, 10, 14, 15, 16 और 17 अक्टूबर तथा 18 अक्टूबर से 26 नवंबर 2026 तक जम्मू तबी से चलने वाली ट्रेन में लगाया जाएगा। इससे त्योहारों के दौरान जम्मू से दिल्ली जाने वाले यात्रियों को अतिरिक्त सीटें उपलब्ध होंगी।

कांग्रेस का वोट चोरी का आरोप 'राक्षस के मुंह से भगवद गीता' सुनने जैसा : कुमारस्वामी

बेंगलुरु, 2 अक्टूबर (एजेंसियाँ)। केंद्रीय भारी उद्योग और इस्पात मंत्री एचडी कुमारस्वामी ने शुक्रवार को कर्नाटक की कांग्रेस सरकार पर मतदाता सूची के 'स्पेशल इंटेसिफ रिजिजन' (एसआईआर) के विरोध को लेकर पाखंड का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि सत्ताधारी पार्टी ने खुद इस प्रक्रिया के शुरुआती चरणों में बड़े पैमाने पर अनियमितताएं की थी। कुमारस्वामी ने एक बयान में कहा कि यह शर्मनाक है कि कांग्रेस पार्टी अब एसआईआर में गड़बड़ियों के खिलाफ बोल रही है।

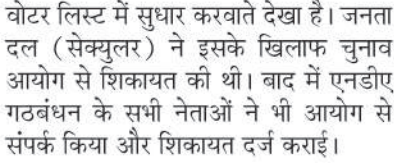
उन्होंने मुख्यमंत्री डीके शिवकुमार और उनके कैबिनेट सहयोगियों की भी आलोचना की कि वे कैबिनेट मीटिंग में शामिल होने के बजाय

सड़कों पर विरोध-प्रदर्शन कर रहे थे। उन्होंने मांग की कि पुलिस उन कांग्रेस नेताओं के खिलाफ तुरंत केस दर्ज करे, जिन्होंने विरोध-प्रदर्शन करके ट्रैफिक जाम किया और जनता को परेशानी में डाला। कांग्रेस का 'वोट चोरी' को लेकर बेवजह हंगामा करना वैसा ही है जैसे किसी राक्षस के मुंह से भगवद गीता का उपदेश सुनना।

वोटर लिस्ट में सुधार की प्रक्रिया के दौरान कांग्रेस कार्यकर्ता बड़ी संख्या में शादी हॉल, कम्युनिटी हॉल और घरों जैसी जगहों पर इकट्ठा हुए थे। उन्होंने कहा कि हमने उन्हें शादी हॉल, कम्युनिटी हॉल, घरों और दूसरी जगहों पर लोगों को ग्रुप में इकट्ठा करते और



वोटर लिस्ट में सुधार करवाते देखा है। जनता दल (सेक्युलर) ने इसके खिलाफ चुनाव आयोग से शिकायत की थी। बाद में एनडीए गठबंधन के सभी नेताओं ने भी आयोग से संपर्क किया और शिकायत दर्ज कराई।



क्रेडिट लेने की बजाय अब आतंकियों का सफाया लक्ष्य

रक्षा विशेषज्ञों के अनुसार गृह मंत्रालय की निगरानी में सभी सुरक्षा एजेंसियां काम कर रही हैं। अब सुरक्षा एजेंसियों के बीच क्रेडिट लेने की होड़ की बजाय आतंकियों का सफाया मुख्य लक्ष्य है। यही कारण है सभी एजेंसियां इनपुट साझा करती हैं, जिससे कामयाबी का प्रतिशत बढ़ रहा है।

डीजीपी से लेकर सेना तक मैदान में

अभियानों की निगरानी अब वरिष्ठ स्तर पर भी लगातार की जा रही है। डीजीपी नलिन प्रभात अलग-अलग जिलों में पहुंचकर जमीनी स्थिति की समीक्षा कर रहे हैं। आईजी जम्मू जोन तेजेंदर सिंह राजोरी में चल रहे अभियानों की निगरानी कर रहे हैं, जबकि कश्मीर जोन के आईजी भी लगातार जिलों का दौरा कर सुरक्षा व्यवस्था और आतंकवाद रोधी अभियानों की समीक्षा कर रहे हैं। सेना की उत्तरी कमान, क्वाइट नाइट कोर, टाइगर डिवीजन और डेल्टा फोर्स भी अपने जिम्मेदारी वाले क्षेत्रों में सक्रिय हैं।

पंजाब बॉर्डर पर घुसपैठ की साजिश नाकाम

तरनतारन में बीएसएफ ने ढेर किए 2 पाकिस्तानी घुसपैठिए



तरनतारन, 2 अक्टूबर (एजेंसियाँ)। भारतीय सीमा पर तैनात सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) के जवानों ने देर रात दो पाकिस्तानी तस्करों को ढेर कर दिया है। सीमा पार से भारत में अवैध रूप से दाखिल होने की कोशिश कर रहे घुसपैठियों से अभी क्या रिकवरी हुई है, इसकी जानकारी अभी सीनियर अधिकारियों की तरफ से साझा नहीं की गई है। घटना बीती रात करीब 12.30 बजे की बताई जा रही है। मिली जानकारी के अनुसार ये घटना तरनतारन क्षेत्र के अंतर्गत आते राजोके की है। बीती रात सरहद पर पहरा दे रहे जवानों ने भारतीय सरहद में लगाई गई कंट्रीली तारों के पार हरकत होते हुए देखी। तकरीबन 3 संदिग्ध

छात्रा को खंडहर में घसीटकर दरिंदगी, दोस्त को भी नहीं छोड़ा; पीड़िता की आपबीती सुन 3 युवक पकड़े

फरीदाबाद, 2 अक्टूबर (एजेंसियां)। दक्षिणी दिल्ली के आस्था कुंज पार्क जैसी वारदात फरीदाबाद में भी हुई हैं। वहां दोस्त संग पार्क में छात्रा से तीन युवकों ने सामूहिक दुष्कर्म किया था। यहां दोस्त संग घूम रही 13 वर्षीय छात्रा को खंडहर बिल्डिंग में घसीटकर तीसरी मंजिल पर ले जाकर तीन युवकों ने सामूहिक दुष्कर्म किया। बदमाशों ने किशोरी के नाबालिग दोस्त को भी नहीं छोड़ा और उसके साथ भी अप्राकृतिक यौनाचार किया। घटना के बारे में बच्चों ने घर पर कुछ नहीं बताया था, मगर तभी से दोनों सर्वमे में थे। अब जब मां ने प्यार से बात की तो छात्रा ने जो आपबीती बताई उससे मां के पैरों चले जमीन खिसक गई। मामले की सूचना तुरंत पुलिस को दी गई। उन्होंने छात्रा और उसके दोस्त को पहले डराकर रुपये मांगे,

उन्होंने रुपये होने से इनकार कर दिया। इसके बाद दो युवक बिल्डिंग के नीचे खड़े हो गए, चार छात्रा और उसके दोस्त को बिल्डिंग की तीसरी मंजिल पर ले गए। वहां एक युवक दरवाजे पर खड़ा हो गया, बाकी तीन युवकों ने छात्रा के साथ सामूहिक दुष्कर्म किया। इसके बाद उन्होंने छात्रा के दोस्त के साथ भी अप्राकृतिक यौनाचार किया। दोनों को डराने धमकाने के बाद नीचे लाकर स्कूटी की चाबी दी और सीधा घर जाने के लिए कहा। साथ ही इस वारदात के बारे में किसी को न बताने की चेतावनी भी दी। छात्रा ने बताया कि सबसे बड़े युवक को उसके साथी कुणाल कहकर संबोधित कर रहे थे। बीपीटीपी थाना प्रभारी प्रदीप कुमार का कहना है कि मुकदमा दर्ज कर लिया है। तीन युवकों को हिरासत में लिया है।

नाबालिग लड़की से 7 महीने तक रेप, वीडियो बनाकर पति को भेज दिया; आरोपी गिरफ्तार

नई दिल्ली, 2 अक्टूबर (एजेंसियाँ)। देश की राजधानी दिल्ली में शर्मनाक घटना सामने आई है। यहां 25 साल का एक युवक नाबालिग लड़के के साथ 7 महीने तक रेप करता रहा और इस दौरान उसका वीडियो बना लिया। अब जब लड़की की शादी हो गई है और वो 18 साल की भी हो चुकी है, तब आरोपी युवक उसके अश्लील वीडियो के सहारे उसे निशाना बना रहा था। इस दौरान लड़की ने ब्लैकमेलिंग से तंग आकर पुलिस का सहारा लिया। केस दर्ज करने के बाद पुलिस ने आरोपी युवक को गिरफ्तार कर लिया और मामले की जांच हो रही है।

मामला दिल्ली के साउथ एवेन्यू इलाके का है। पुलिस ने बताया कि नाबालिग पीड़िता और आरोपी युवक दोनों ही एक-दूसरे के पड़ोसी हैं और एक-दूसरे को कई साल से जानते हैं। पुलिस ने बताया कि आरोपी युवक ने पिछले साल 7 महीने तक लगातार लड़की को निशाना बनाया और उसे अपनी हवस का शिकार बनाता रहा। पुलिस से इस घटना की शिकायत करते हुए पीड़िता ने बताया कि जब वो घर पर अकेली थी, तभी आरोपी युवक ने उसका यौन शोषण किया।

भीषण हादसा, ट्रक और पिकअप वैन की टक्कर में 7 की मौत

मुंबई, 2 अक्टूबर (एजेंसियाँ)। महाराष्ट्र में आज सुबह एक भीषण सड़क हादसे से जुड़ी खबर सामने आई है। अरावती जिले के बुलढाणा जिले के शेगांव से मां दुर्गा की मूर्ति लेकर वर्धा जिले जा रहे थे श्रद्धालुओं से भरी पिकअप वैन को ट्रक ने टक्कर मार दी। इस हादसे में सात लोगों की मौत हो गई और 21 लोग घायल हो गए हैं। हादसा धामणगांव के चैनल 97 के पास हुआ। घायलों में से चार-पांच लोगों की की हालत बेवद गंभीर बताई जा रही है। जानकारी के मुताबिक, शुक्रवार की सुबह यह हादसा धामणगांव रेलवे के पास समृद्धि महामार्ग के चैनल नंबर 97 पर हुआ।

पिकअप में सवार लोग शेगांव से मां दुर्गा की मूर्ति लेकर वर्धा की ओर जा रहे थे। इसी दौरान ट्रक और टेम्पो पिकअप के बीच जोरदार टक्कर हो गई। टक्कर इतनी भीषण थी कि पांच लोगों की घटनास्थल पर ही मौत हो गई और इलाज के दौरान दो और लोगों की मौत हो गई। हादसे की सूचना मिलते ही धामणगांव रेलवे पुलिस मौके पर पहुंची।

स्थानीय नागरिकों और पत्रकारों की सतर्कता से राहत कार्य तेजी से शुरू किया गया और घायलों को तत्काल अस्पताल पहुंचाने में मदद मिली। सभी घायलों को धामणगांव ग्रामीण अस्पताल ले जाया गया। अस्पताल में उपचार कर रहे डॉक्टरों ने बताया कि चार से पांच घायलों की हालत गंभीर बनी हुई है। बता दें कि इस हादसे में कुल 21 लोग घायल हुए हैं, जिसमें से 5 लोगों की मौके पर ही मौत हो गई। 14 से 15 लोग मामूली रूप से घायल हैं और फिलहाल आउट ऑफ डेंजर बताए जा रहे हैं।

